Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
Volume 3, Issue 1 (Jan – Dec), 2024, Pp 1-8

भारतीय संस्कृति एवं हिन्दी साहित्य में नारी का स्थान

डॉ॰ मनजीत कौर
सहायक प्रवक्त्री (हिन्दी विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः **tinymanjeet@gmail.com**
दूरभाषः 7988684685

संक्षेपिका

महिला और पुरुष दोनों ही सृष्टि के निर्माण एवं संचालन हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। वैदिक काल के अंतर्गत प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी व पुरुष दोनों को समान रूप से महत्त्व दिया जाता था। यदि ये कहा जाये कि आज तक के मानव इतिहास में केवल वैदिक काल में महिलाओं को सर्वोच्च एवं सर्वोपरि स्थान प्राप्त था तो कदापि अनुचित न होगा। उस समय नारी को स्वयं के विकास हेतु समस्त अधिकार प्राप्त थे। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का, युद्धविद्या, संगीत, नृत्य, गणित, खगोल आदि विद्याएँ सीखने की भी पूर्ण स्वतंत्रता थी। उस समय नारी को परिपक्व अवस्था में विवाह का निर्णय करने का भी अधिकार था तथा स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। महिलाओं को अपना वर स्वयं चुनने की स्वतंत्रता थी। नारी को परिवार व समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। कहने का अभिप्राय है कि वैदिक काल में नारी को विशेष सम्मानजनक स्थान दिया गया था। उस समय ऐसी कोई कुप्रथा भी नहीं थी जो कि नारी के गौरव को हानि पहुँचाती हो। एक समय था जब भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' की उपाधि से अलंकृत किया जाता था। इसके असंख्य कारण थे। भारतवर्ष अपनी प्राचीन, विशाल एवं गौरवशाली संस्कृति के लिये विश्व भर में विख्यात था। भारत वो देश था जो सम्पूर्ण विश्व का गुरु अथवा शिक्षक कहा जाता था। पूरे विश्व से छात्र यहाँ के विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने आते थे। भारतवर्ष की सुदृढ़ राजनीतिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, शिक्षा- प्रणाली, विभिन्न कलाएँ विश्व भर में प्रसिद्ध थी। उस समय भारतवर्ष के लोग अपनी संस्कृति को सर्वोपरि मानते थे व हृदय से उसका सम्मान करते थे। स्त्री व पुरुष में समानता थी; दोनों को जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिये एक समान अवसर प्राप्त होते थे। भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' कहलाने में जितना योगदान यहाँ के पुरुषों का रहा है उतना ही नारी जाति का भी रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य उन महान महिलाओं के अतुलनीय व अविस्मरणीय योगदान को उजागर करना है जिनके कारण भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' की उपाधि से अलंकृत किया जाता था। इसके साथ-साथ वैदिक काल के बाद हुई उन महिलाओं के योगदान का उल्लेख करना भी शोध पत्र का उद्देश्य है जिनके कारण भारतवर्ष एक बार फिर से 'विश्वगुरु' बनने के मार्ग पर अग्रसर होता जा रहा है।

कुंजी शब्द-युद्धविद्या, स्वर्णयुग, कर्म काण्ड, ब्रह्मज्ञानी, विश्वगुरू, विदुषी।

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान

निःसंदेह भारतवर्ष को 'विश्वगुरु के पद पर आसीन करने में महिलाओं की अत्यन्त विशेष भूमिका रही है। वैदिक काल की अनेक विदुषी महिलाओं के शौर्य, शक्ति, बुद्धिमता, निपुणता, निडरता, कुशलता आदि के कारण भारत देश 'विश्वगुरु' के पद पर आसीन हुआ। परन्तु मध्यकाल में अनेक विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण व लूटपाट के कारण भारत के गौरव को गहरा आघात पहुँचा। असंख्य विदेशी शासकों ने भारत पर अनगिनत आक्रमण किये,

यहाँ का अपार धन-दौलत लूटा तथा सैंकड़ों वर्ष तक शासन भी किया। इस प्रकार विश्वगुरु भारत के गौरव एवं अस्मिता को धुमिल किया गया। ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में भारत देश की नारी जाति को भी अनेक कुप्रथाओं का शिकार होना पड़ा, उसके गौरव व मान-सम्मान को भी गहरा आघात पहुँचा। आधुनिक काल तक आते-आते पराधीन भारत मुगल शासकों व ब्रिटिश शासकों के आघातों से उभरने का प्रयास कर रहा था। सैंकड़ों वर्षों की पराधीनता से भारत पराजित अवश्य हो गया था परन्तु टूटा नहीं था।आधुनिक काल के प्रारम्भ में अनेक सामाजिक आंदोलन चलाये गये जिसके अन्तर्गत देश, समाज व महिलाओं की स्थिति सुधार पर विशेष बल दिया गया। वर्तमान काल में मानव जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं हैं जहाँ महिला कार्यरत न हो; वह पुरुष के बराबर नहीं बल्कि उससे आगे होकर प्रत्येक कार्य सम्भव कर सकती है। राजनीति, समाज, धर्म, आर्थिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, खेल, सिनेमा, मीडिया, ज्ञान- विज्ञान, खेल आदि असंख्य क्षेत्रों में महिला अपनी विजय का परचम निडरता से फहरा रही है। कहने का अभिप्राय यह है कि आज महिलाएँ एक बार फिर भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' बनाने के मार्ग की ओर अग्रसर करने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक महिलाओं के अविस्मरणीय योगदान को निम्नलिखित तीन आयामों में विभाजित किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत उनकी भूमिका को सहजता से समझा जा सकता है:वैदिक काल से लेकर आज तक अनेक महान महिलाएँ हुयी हैं जिन्होंने भारतवर्ष के गौरव को बढ़ाया है। समयानुसार कालों का विभाजन निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है:- 1. वैदिक काल 2. महाकाव्य काल 3.मध्यकाल 4. आधुनिक काल। इन विभिन्न कालों में भारतीय नारी ने भारतवर्ष की संस्कृति के गौरव को बढ़ाया है जिसका विवरण निम्नलिखित है :-

(क) वैदिककालीन महिलाओं की भूमिका

वैदिक काल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का मूल आधार है। इस काल की समय सीमा ईसा पूर्व 1500 से 1000 वर्ष तक मानी जाती है। वैदिक काल को प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम काल भी कहा जाता है। वैदिक काल में भारतीय समाज में महिलाओं की दशा अत्यन्त सम्मानजनक रही है। नारी को घर व समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया था। लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, इंद्राणी, विश्वहारा, शची, गार्गी, मैत्रेयी, रत्नावली, सिक्ता, देवयानी, निवावरी, अरुंधती, अनुसुइया, यमी, सुलक्षण, सावित्रि, श्रद्धा आदि असंख्य महिलाएँ प्राचीन काल में हुई हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति के गौरव को और अधिक गौरवान्वित किया है। इन्हीं के अटल व आदर्श व्यक्तित्व के कारण भारतवर्ष का गुणगान सम्पूर्ण विश्व में किया जाने लगा था।

सोती वीरेन्द्र चन्द्र के अनुसार - "भारत में स्त्रियों की गौरवस्पद स्थिति के लिये वैदिक समय उनकी उत्युच्च उन्नत दशा के आधार का स्वर्ण युग था। अतः भारत में वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति आगामी युगों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ स्वीकार की गई हैं।"[1]

ये महान महिलाएँ सम्पूर्ण नारी जाति के लिये आदर्श स्थापित करती हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में महिलाओं का समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। यदि वैदिक काल को महिलाओं का स्वर्गयुग कहा जाये तो कदापि अनुचित न होगा। उस काल में नारी समस्त सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में भाग लेती थी। उसके बिना यज्ञ-हवन या धार्मिक अनुष्ठान अपूर्ण माने जाते थे। महिलाओं को वेदों का अध्ययन करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उस समय महिलाओं को अपना वर चुने का अधिकार था, परिपक्व अवस्था में लड़की का विवाह किया जाता था। नारी को शिक्षा प्राप्त करने तथा विभिन्न कलाएँ सीखने की भी पूर्ण स्वतंत्रता

थी ।गृहस्थी में महिला की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती थी। घर के समस्त कार्य करना, घर की वस्तुओं की साज-सम्भाल करना, बच्चों का उत्तम पालन पोषण करना महिलाओं के मुख्य कत्र्तव्य थे। इस काल में विदूषी महिलाओं को आचार्या या पंडिता कहकर पुकारा जाता था ।इस काल की अनेक महिलाओं ने शिक्षा प्राप्त करके अपनी दक्षता को प्रमाणित किया है तथा सम्पूर्ण विश्व में भारतवर्ष की विजय का अनुपम परचम लहराया है। इनके अपार योगदान व बुद्धिमता के कारण भारत देश को 'विश्वगुरु' की उपाधि से अलंकृत किया गया था।

(ख) महाकाव्य कालीन महिलाओं की भूमिका

भारतीय संस्कृति के दो विश्वप्रसिद्ध महाकाव्य हैं - (क) रामायण (ख) महाभारत। पहले रामायणकाल आता है: उसके बाद महाभारत काल। इन दोनों महाकाव्यों को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का मूल आधारा माना जाता है। इन महाग्रंथों में चित्रित विभिन्न पात्रों के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को मानवता, सद्भावना, कर्तव्य परायणता का अमर संदेश दिया गया है। दोनों महाकाव्य सम्पूर्ण विश्व के साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों महाकाव्यों में महिलाओं की स्थिति एवं आदर्श महिलाओं का चित्रण भी प्रस्तुत किया गया है। उस समय की आदर्श महिलाओं का प्रभाव वर्तमान काल के समाज पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

(I) रामायण काल की आदर्श महिलाएँ

'रामायण' भारतीय संस्कृति का एक ऐसा विशिष्ट ग्रंथ है जिसमें मनुष्य जाति के सम्पूर्ण जीवन को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार होने के साथ-साथ ये महाकाव्य भारतीय जन साधारण के लिये पूजनीय भी है। इसमें मानव जीवन के कत्र्तव्यों एवं उद्देश्यों को बहुत आकृष्ट ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

इस महाकाव्य में अनेक आदर्श महिलाओं का चरित्र-चित्रण भी प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें महिलाओं के प्रति समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण भी देखने को मिलता है। कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति, शबरी, अहिल्या, मन्थरा, तारा, मंदोदरी, त्रिजटा, शूर्पनखा, अनुसुइया, सुलक्षणा आदि रामायणकाल की मुख्य महिलाएँ हैं। इनमें अनेक आदर्श महिला पात्र ऐसे हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति को अपने उत्तम व्यवहार से गौरवान्वित किया है। ये आदर्श महिलाएँ आज भी भारतीय समाज पर अपना गहरा प्रभाव रखती हैं। सीता रामायण काल की उत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ महिला हैं जो आज भी सम्पूर्ण नारी जाति के लिये प्रेरणास्रोत हैं। कौशल्या एवं सुमित्रा आदर्श माँ के रूप में समाज को सन्मार्ग दिखाती प्रतीत होती हैं। शबरी आदर्श भक्ति, स्नेह व समर्पण की प्रतिमूर्ति हैं। उर्मिला तथा माण्डवी त्याग, तप व समर्पण का प्रतीक हैं। इन आदर्श महिलाओं की कत्र्तव्यपरायणता के कारण भारतवर्ष को 'विश्वगुरु' की उपाधि से विभूषित किया गया था।

भारतीय आदर्श महिला सीता के विषय में पं० भगवान दत्त कहते हैं - "आजीवन जिसके भाग्य में दुःख ही दुख था, अनेक कष्टों को सहती हुई भी जो सत्य-पथ से विचलित न हुई, जिसकी पुण्यगाथा को लेखबद्ध कर महर्षि वाल्मीकि भी अजर-अमर हो गये हैं जिसकी पवित्रता की मूर्ति के नाममात्र के ग्रहण करने से हजारों बरस बाद भी स्त्री-जाति अपने को कृत-कृत्य समझती हैं, वही सती-साध्वी सीता जनकवंश की पुत्री थी।"[2]

(II) महाभारत काल की आदर्श महिलाएँ

महाभारत नामक महाकाव्य सम्पूर्ण मानव जाति को निष्काम भाव से कर्म करने की प्रेरणा देता है। महाभारत काल में भी अनेक महान महिलाएँ हुई जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष आदर्श स्थापित किये। सत्यवती, गांधारी, कुन्ती, द्रौपदी, सुभद्रा, सत्यभामा, रुक्मिणी, जामवन्ती, लक्ष्मणा, हिडिम्बा, भानुमति, उलूपी, मौरवी, उर्वशी, गंगा माद्रि, अम्बिका आदि इस काल की महिलाएँ हैं। इस काल की महिलाओं ने अपने शौर्य, बुद्धिमता, निडरता के बल पर भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया है। इन आदर्श महिलाओं की कर्तव्यपरायणता, निडरता, बुद्धिमता के उदाहरण वर्तमान काल के समाज को आज भी गहरे रूप से प्रभावित करते हैं। आज भी महिलाओं को द्रौपदी से अन्याय के विरूद्ध लड़ने की शक्ति प्राप्त होती हैं। गांधारी एक आदर्श पत्नी के रूप में उभरकर सामने आती हैं। यद्यपि इस काल में महिलाओं का स्थिति पहले की भांति सम्मानजनक नहीं रही परन्तु फिर भी इस काल की विपरीत परिस्थितियों में भी अनेक महिलाओं ने अपने अस्तित्व की रक्षा हेतू प्रयास किये तथा इतिहास में अमर हो गई। कहने का भाव यह है कि भारतवर्ष का विश्वगुरु के पद पर सुशोभित करने में इस काल की महिलाओं की भी विशेष भूमिका रही है।

महाभारत में वर्णित नारी जाति के विषय में आशारानी व्होरा कहती हैं - "महाभारत में महिलाओं का वर्णन विदुषियों के रूप में कम ओर तप, त्याग, नम्रता, पति-सेवा आदि गुणों से विभूषित गृहस्वामिनी के रूप में अधिक मिलता है।"[3]

(ग) मध्यकालीन महिलाओं की भूमिका

मध्यकाल तक आते-आते महिलाओं की दशा में बहुत परिवर्तन आ चुका था। नारी का गौरव व सम्मान क्षीण हो गया था। जब मध्यकाल का आरंभ हुआ तब गुप्तवंश का पतन हो चुका था तथा मुगल वंश का उदय होने लगा था।भारतवर्ष राजनीतिक रूप से खण्ड-खण्ड होने लगा था। भारतीय शासकों में एकता व सद्भावना की कमी थी। इसी बात का लाभ उठाकर अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किया तथा यहां सैंकड़ों वर्ष तक शासन किया। इस काल में भारतवर्ष आर्थिक रूप से क्षीण होने लगा था। विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ का धन-दौलत लूटा व अपने देश ले गये जिसके कारण 'सोने की चिड़ियां' कहा जाने वाला देश निर्धनता के गर्त में गिरने लगा। मध्यकाल में अनेक राजवंशों के बीच संघर्ष चलता रहा जिसका भुगतान भारतवर्ष के जन सामान्य को करना पड़ा। इसी काल में सैंकड़ों युद्ध लड़े गये जिसके कारण भारतीय समाज को आर्थिक व मानसिक आघात सहन करने पड़े। ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में महिलाओं की स्थिति का अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है। इस समय समाज पूर्ण रूप से पितृसत्तात्मक हो गया था। राजनीतिक दृष्टि से सम्पूर्ण भारत अनेक भागों में विभाजित हो चुका था। सामाजिक व्यवस्था भी असंतुलित थी। समाज में अनेक कुप्रथाएँ प्रचलित होने लगी थी। महिलाओं से ही जुड़ी हुई थी। समाज में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि कुरीतियों के कारण भारतीय समाज व संस्कृति दोनों जर्जर होते जा रहे थे। महिलाओं की दशा अत्यन्त दयनीय थी।

इसी काल में बौद्ध व जैन धर्म का आगमन हुआ। भारतीय समाज में अनेक पाखण्ड, कर्मकाण्ड, आडम्बर फैल चुके थे। इनके विरोध में ही इन धर्मों का आविर्भाव हुआ। इन दोनों धर्मों ने एक ओर समाज से

कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया तो दूसरी ओर महिलाओं की बुरी स्थिति को सुधारने के प्रयत्न भी किये। इन्होंने स्वयं अपने धर्म में महिलाओं को विशेष स्थान प्रदान किया।

बौद्ध धर्म के अन्तर्गत धम्मदिन्ना, खेमा, उप्पलवन्ना ऐसी महिलाएँ थी जो भिक्षुणियां कहलाती थी तथा विद्वान महिलाएं थी। महाबुद्ध की चाची गौतमी व माता माया देवी बौद्ध दीक्षा प्राप्त करने वाली प्रथम महिला थीं।

जैन धर्म में भी महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा गया। परन्तु धीरे-धीरे ये धर्म भी अनेक सम्प्रदायों में विभाजित हो गये। इन धर्मों में भी पाखण्ड व आडम्बरों ने अपनी जगह बना ली। अतः नारी सम्मान इन धर्मों में भी प्रश्न चिह्न बनकर रह गया। धर्म शास्त्रों के युग में भी नारी सम्मान की रक्षा नहीं हो पा रही थी। नारी को केवल वस्तु या भोग विलास का सामान समझा जाने लगा।

इसके पश्चात् मुस्लिम आक्रमणों के कारण भारतीय समाज की स्थिति और अधिक गंभीर हो गई। मुगल शासकों के अत्याचारों के कारण भारतीय समाज में पर्दा प्रथा, अन्मेल विवाह, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों का प्रचलन बढ़ गया। मध्यकाल में नारी जाति की दशा अत्यन्त गम्भीर थी। फिर भी इस काल में चाँद बीबी, अहल्याबाई होल्कर, ताराबाई, पद्मिनी, पन्ना, दुर्गावती, हाडी रानी आदि महान महिलाओं का आगमन हुआ जिन्होंने विदेशी शासकों के अत्याचारों का डटकर सामना किया और नारी जाति के लिये आदर्श स्थापित किये।

(घ) आधुनिक कालीन महिलाओं की भूमिका:

भारत में आधुनिक काल का आरम्भ ब्रिटिश शासन से माना जाता है। अधिकतर विद्वान भी इस मत से सहमत हैं। भारत पर मुगल वंश का शासन समाप्त होने के बाद ब्रिटिश शासकों ने यहां व्यापार के माध्यम से अपना शासन स्थापित कर लिया।अंग्रेजों ने भारतवासियों पर शासन करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम यहां व्यापार करना आरंभ किया तथा धीरे-धीरे पूरे भारत पर अपना आधिपत्य जमा लिया। उन्होंने भारतीय समाज की कमजोरियों का पूरा लाभ उठाया। यहाँ के धर्म, जातियों, सम्प्रदायों में आपसी फूट डलवाकर उन्हें विभाजित करवा दिया।भारत की सभ्यता, संस्कृति व शिक्षा नीति को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। विदेशी पराधीनता का भुगतान नारी जाति को भी करना पड़ा।

इस काल में नारी की दयनीय दशा को सुधारने के लिये अनेक प्रयास किये गये, अनेक आंदोलन चलाये गये। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि अनेक आंदोलनों के माध्यम से भारतीय समाज व नारी की दशा को सुधारने के प्रयास किये गये। समाज सुधारक राजा राम मोहन राय के अथक प्रयासों से सती प्रथा पर पाबन्दी लगा दी गई। स्वामी विवेकानन्द व स्वामी दयानन्द ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुये कहा - "यदि स्त्रियों में से एक भी ब्रह्मज्ञानी हो गई तो एक व्यक्तित्व के तेज से सहस्त्रों स्फूर्ति प्राप्त करेंगी और सत्य के प्रति जाग्रति कही जायेगी।इससे देश और समाज का बड़ा उपकार होगा।"[4]

इस काल में अनेक महान महिलाएं सामने आई जिन्होंने सम्पूर्ण नारी जाति को सम्मान से जीने का अधिकार दिलवाया तथा विदेशी आक्रमणकारियों के अत्याचारों का डटकर सामना भी किया।भारतवर्ष के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई० के अन्तर्गत अनेक महान महिलाओं ने अपना योगदान दिया। सर्वप्रथम नाम झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का आता है जिन्होंने अनेक बार अपनी तलवार के बल पर फिरंगियों को परास्त कर दिया था।

महारानी लक्ष्मीबाई के अतिरिक्त वीरांगना झलकारी बाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, मैनावती, चैहान रानी, दुर्गावती अथवा दुर्गा भाभी, बैजा बाई, मोती बाई, अवन्ति बाई, अजीजन (नर्तकी), उदा देवी, द्रौपदी, हैदरी बाई, आशा देवी, रानी ईश्वरी कुमारी, आदि अनेक महिलाओं ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये समस्त महान् महिलाएँ सम्पूर्ण नारी जाति के लिये आदर्श हैं तथा भारतवर्ष को फिर से विश्वगुरु के सिंहासन पर आसीन कराने का आरंभ करने वाली महिला शक्ति भी हैं।इन महिलाओं के अतिरिक्त सरोजनी नायडू, कित्तूर रानी, सावित्रीबाई फूले, उषा मेहता, अरुणा आसफ अली, भीकाजी कामा, लक्ष्मी सहगल, कस्तूरबा गाँधी, नीरा आर्या, मातंगिनी हजारा, एनी बसेंट, विजयलक्ष्मी पंडित, कमला चट्टोपाध्याय, सुचेता कृपलानी, आदि अनेक महान महिलाओं ने भारतदेश की अस्मिता के लिये, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये असंख्य बलिदान दिये, संघर्ष किये तथा अपना नाम इतिहास में अमर कर दिया।

इस काल के विषय में डॉ॰ सरस्वती मिश्रा का कहना है - "इसी समय भारत में राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द व अन्य विद्वानों द्वारा समाज सुधार आंदोलन भी चलाया गया जिसमें मुख्यतः धार्मिक कर्मकाण्डों, मूर्तिपूजा, जातीय भेदभाव व स्त्रियों की निम्न स्थिति आदि का विरोध किया गया।"[5]

हिन्दी साहित्य में नारी का स्थान

हिन्दी साहित्य के इतिहास में महिला साहित्यकारों में सबसे पहला नाम मीराबाई का आता है। ये कृष्ण की भक्ति करती थी। इन्होंने श्रीकृष्ण की भक्ति से जुड़े अनेक पद लिखे। हिन्दी साहित्य के स्वर्णिम युग में हुई मीराबाई ने सम्पूर्ण भारतीय समाज के समक्ष भक्ति व नारी शक्ति का उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने समय में अनेक सामाजिक अन्यायों का डटकर सामना भी किया। इनके पश्चात् महादेवी वर्मा का नाम आता है। इन्हें आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। सुभद्रा कुमारी चैहान, शिवानी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा अग्निहोत्री, मालती जोशी, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, प्रभा खेतान, मैत्रयी पुष्पा, मृणाल पाण्डे, अनामिका, अल्का सरावगी आदि अनेक महिलाएं हैं जिन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य की गरिमा बढ़ाई हैं बल्कि सम्पूर्ण नारी जाति की संवेदनाओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की हैं। वर्तमान काल में भी महिला लेखिकाएँ साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दे रही है तथा हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ा रही है।

21वीं सदी की महिलाओं की भूमिका

21वीं सदी को ज्ञान-विज्ञान, उन्नति तथा नारी की सदी कहकर पुकारा जा रहा है। इस सदी में मानव के पास असंख्य साधन विद्यमान हैं जिनके माध्यम से वो अपने जीवन को सुखमय बना सकता है। आज मनुष्य ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अद्भुत विकास कर लिया है। निःसंदेह भारतवर्ष की महिलाओं की स्थिति भी पहले से बेहतर हो गई हैं। आज महिलाओं के पास अपना विकास करने के लिये असीमित सुअवसर उपलब्ध हैं। पहले नारी केवल घर की चारदीवारी तक सीमित थी परन्तु अब वो प्रत्येक कार्यक्षेत्र में निष्ठापूर्वक कार्य करके अपनी विजय का परचम लहरा रही है। आज नारी स्वयं समाज व देश के नवनिर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र राजनीति, समाज, धर्म, अर्थ, संस्कृति, कला साहित्य, खेल, सिनेमा, मीडिया, ज्ञान-विज्ञान आदि में महिलाओं का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। महिलाएँ देश व समाज के विकास में पुरुषों के

बराबर नहीं बल्कि उनसे कहीं आगे बढ़कर अपना योगदान दे रही हैं। कहने का भाव ये कि महिलाएँ एक बार फिर भारतवर्ष को विश्वगुरु बनने के मार्ग पर ले जाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं।

परन्तु इसके साथ-साथ एक कटु सत्य ये भी हैं कि आज भी नारी पुरुष और समाज की संकीर्ण, घटिया तथा अमानवीय सोच का शिकार है। आज भी नारी कन्या भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, अन्मेल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा जैसी घृणित प्रथाओं का शिकार होती है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। महिलाओं के साथ-साथ छोटी बच्चियाँ घरेलू हिंसा, संकीर्ण सामाजिक रीति-रिवाजों, सामूहिक दुष्कर्म का शिकार हो रही हैं।

"यूनिसेफ ने पूर्व कम्युनिस्ट देशों की महिलाओं एवं लड़कियों की एक रिपोर्ट में पोलैण्ड की एक गैर सरकारी संस्था ला-स्ट्राडा एवं वियना का 'इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन' को उद्धत करते हुये कहा है कि पूर्व यूरोप की करीब 5 लाख लड़कियां पश्चिम में वैश्यावृत्ति कर रही हैं। अकेले बुलगारिया की करीब 10 हजार लड़कियां यूरोपीय संघ के देशों में सैक्स व्यापार के लिये लाई जाती हैं।"[6]

ऐसी अमानवीय घटनाओं की कोई गिनती नहीं हैं। हर रोज़ ऐसी घटनाएँ टी॰ वी॰ चैनलों व अखबारों में देखने को मिलती हैं जो जन सामान्य के हृदय को उद्वेलित कर देती हैं। ऐसे समय पर महिला सशक्तिकरण के पक्ष में वाणी बुलन्द करने वाले भी दिखाई नहीं देते। वास्तव में ऐसी घटनाएँ सम्पूर्ण नारी जाति का मनोबल गिरा देती हैं और समाज के मन में भय उत्पन्न कर देती हैं। ऐसी भयावह स्थिति में प्राचीन भारतीय संस्कृति का अनुसरण करना उचित होगा।

स्वामी रंगनाथानन्द के शब्दों में - "हमारी संस्कृति के पीछे वेदान्त एक महान् दर्शन है....भारतीय संस्कृति समस्त सामाजिक विकास को मानवीय सम्बन्धों के ताने-बाने के अन्तर्गत इसी सत्य की स्थापना के लिये प्रक्रिया के रूप में देखती हैं। इसी से स्वतंत्रता, समानता तथा मानवीय व्यक्तित्व की गरिमा और पवित्रता जैसे मूल्य प्राप्त किये जाते हैं।[7]

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नारी भारतीय संस्कृति एवं हिन्दी साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग हैं। महिलाओं के बिना सृष्टि का विकास सम्भव नहीं हैं। परन्तु बड़े ही खेद का विषय हैं कि वैदिक काल के पश्चात मानव ने महिला को वो दर्जा या सम्मान नहीं दिया जो उसे मिलना चाहिये या, जिसकी वो अधिकारिणी है। वैदिक काल के बाद नारी की दशा इतनी भयावह हो गई कि शब्दों में उजागर करना भी कठिन लगता है। परन्तु नारी सदैव अपने अस्तित्व की रक्षा हेतू समाज से लड़ती रही। अनगिनत अत्याचारों का सामना करते हुये भी नारी अपने कत्र्तव्यों का पालन करती रही है तथा समाज व देश की उन्नति में अपना अनमोल योगदान भी दे रही है। अतैव यदि मानवजाति अपने सुरक्षित, शांतिमय और उज्ज्वल भविष्य चाहती हैं तो उसे सृष्टि की निर्मात्री, संसार की जननी को सम्मान की दृष्टि से देखना होगा। तभी भविष्य में भारत और उसकी संस्कृति की रक्षा हो सकती है। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य में भी नारी को सम्मानपूर्वक दृष्टि से देखने की आवश्यकता है।
इस संदर्भ में महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं:-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में

पीयूष स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।"[8]

संदर्भ सूची:-

1. सोती वीरेन्द्र चन्द्र, 'भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति' पृ॰ 1
2. पं॰ भगवदत्त, 'भारतीय महिला', पृ॰ 1
3. आशारानी व्होरा, 'भारतीय नारी-दशा दिशा', पृ॰ 6
4. विश्वप्रकाश गुप्ता, मोहिनी गुप्ता, स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं, पृ॰ 19
5. डॉ॰ सरस्वती मिश्रा, भारतीय स्त्रियों की परिस्थिति, पृ॰ 19
6. वी॰ ए॰ सिंह, जनमेजयसिंह, आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, पृ॰ 165
7. स्वामी रंगनाथानन्द, आधुनिक युग में नारी, पृ॰ 9
8. जयशंकर प्रसाद, 'कामायनी' पृ॰ 44